अध्याय 1

प्रस्तावना

अध्याय - 1

प्रस्तावना

1.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो समाज में रहकर ही अपना विकास कर सकता है मानव के विकास में शिक्षा का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। इस प्रकार समाज का शिक्षा से घनिष्ठ संबंध है, और समाज अपनी आवश्यकताओं आकांक्षाओं एवं आदर्शों के अनुकूल शिक्षा की प्रक्रिया से सुनियोजित करके अपने आदर्शों की प्राप्ति की चेष्टा करता है, साथ ही साथ समाज व्यक्ति को अपना उपयोगी एवं श्रेष्ठ सदस्य बनाने का भी प्रयत्न करता है। यह कार्य तभी संभव है ,जब व्यक्ति समाज के साथ अनुकूलन प्राप्त कर लें और समाज की मान्यताओं एवं मूल्यों के अनुरूप अपने व्यवहार में परिवर्तन कर ले शिक्षा इस कार्य में व्यक्ति की सहायता करती है अतः समाज समय और परिस्थिति के अनुसार यह निश्चित करता है ,कि व्यक्ति को किस प्रकार की शिक्षा दी जाए जिससे कि वह अपनी एवं समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके स्पष्ट है कि शिक्षा का स्वरूप समाज की आवश्यकता के अनुसार निर्मित होता है अथवा समाज ही शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार है।

1.2 विद्यालय

विद्यालय शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर महत्वपूर्ण प्रभाव रहता है। समाज अपनी संबंधों एवं भलाई के लिए विद्यालयों की स्थापना करता है। औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए बच्चों को विद्यालय भेजा जाता है। विद्यालय एक मंदिर की भांति है ,जहां जाति, वर्ण ,नस्ल आदि के भेदभाव से ऊपर उठकर विभिन्न परिवार से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। वे सभी यहां समान

रूप से एक ही छत के नीचे बैठते हैं; तथा एक ही अध्यापक द्वारा पढ़ाए जाते हैं |विद्यालय सामाजिक जीवन का आदरणीय संक्षिप्त रूप है। विद्यालय विद्यार्थी के अत्यधिक समाजीकरण करता है विभिन्न परिवारों से विद्यार्थी विद्यालय में एक दूसरे के संपर्क में आते हैं वह प्रातः कालीन सभा में कक्षा में पुस्तकालय में भोजनालय में तथा खेल के मैदान में साथ - साथ रहते हैं, उनके बीच संबंध स्थापित होता है| वह एक दूसरे से बहुत कुछ सीखते हैं ,छोटे बच्चे भी अपने से बड़ों से बहुत कुछ सीखते हैं कुछ मामलों में तो बड़े भी छोटो से सीखते हैं विद्यालय प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी अधिक से अधिक सामाजिक रूप से कुशल बनते हैं, डूई (1884) के अनुसार विद्यालय एक ऐसी विशेष वातावरण है जहां जीवन के गुणों क्रियाओं और व्यवसाय ओ की शिक्षा इस उद्देश्य से दिया जाता है ताकि बालक का विकास इच्छित दिशा में हो|

वर्तमान समय में पहले की अपेक्षा विद्यालयों का दायित्व बढ़ गया है| वर्तमान में विद्यालयों में समुचित साधन सुविधाएं जुटाई जा रही है, और बालकओं के व्यक्तित्व का निर्माण करके उन्हें भावी जीवन के लिए सक्षम बनाया जा रहा है। विद्यालय में विद्यार्थी के प्रवेश के पश्चात उसका संपर्क विद्यालय की हर सजीव एवं निर्जीव वस्तु से होता है, जिससे विद्यार्थी का संबंध जुड़ जाता है यह संबंध विद्यार्थी के विकास की लक्ष्य प्राप्ति में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहायक होती है। विद्यालय मैं सभी तरह की परिस्थितियां मिलकर एक विशेष प्रकार के पर्यावरण का निर्माण करती है , विद्यालय का पर्यावरण बालक के विकास एवं प्रगति को प्रभावित करता है, जोकि उस वातावरण को निर्माण में समाज अथवा समुदाय का महत्वपूर्ण भूमिका होता है जो विद्यालय निर्माण में अपनी भूमिका निभाता है। ओटवे(1954) के अनुसार विद्यालय एक सामाजिक अविष्कार माना जा सकता है जो युवाओं के विशिष्ट शिक्षण के द्वारा समाज की सेवा करता है।

विद्यालय वस्तुतः समाज एक लघु रूप है इस समाज में बच्चे विभिन्न परिवार, समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। विद्यालय समाज रूपी वस्त्र को परिवर्तित समय के अनुसार नव रूप देने तथा पुनः निर्माण का कार्य करते हैं। विद्यालय गतिशील विश्व में नई परिस्थितियों के साथ नए उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नवीन सोच एवं संरचनाएं प्रस्तुत करते हैं। विद्यालय और घर में कुछ समानताएं हैं दोनों का उद्देश्य बच्चों के व्यक्तित्व में आत्मीय विकास करना है। ताकि समाज द्वारा निर्धारित विद्यालय प्रक्रिया के उद्देश्यों को यथार्थ रूप दिया जा सके।

1.3 विद्यालय की परिभाषा

डीवी के अनुसार विद्यालय एक ऐसी विशिष्ट वातावरण है, जहां जीवन के कुछ गुणों और कुछ विशेष प्रकार की क्रियाएं तथा विषयों की शिक्षा इस उद्देश्य से दिया जाता है कि बालक का विकास वांछित दिशा में हो" ।

टी.पी.नन के अनुसार "विद्यालय को मुख्य रूप से इस प्रकार का स्थान नहीं समझा जाना चाहिए, जहां किसी निश्चित ज्ञान को सीखा जाता है, वरना यह वह स्थान है जहां बालकों को क्रियाओं के उन निश्चित रूपों में प्रशिक्षित किया जाता है जो इस विशाल संसार में सबसे महान और सबसे अधिक महत्व वाली है'।

ओटावे के अनुसार 'विद्यालय युवकों को विशेष प्रकार की शिक्षा देने वाले सामाजिक आविष्कार के रूप में समझे जाते हैं'।

के.जी. सैयदैन के अनुसार 'एक राष्ट्र का विद्यालय जनता की आ सकता हूं तथा समस्याओं पर आधारित होना चाहिए| विद्यालय का पाठ्यक्रम उनके जीवन का साररूप होना चाहिए| इसको सामुदायिक जीवन की महत्वपूर्ण विशेषताओं को अपने स्वाभाविक वातावरण में प्रतिबिंबित करना चाहिए'।

विद्यालय की परिभाषा समय के अनुसार परिवर्तित होते गई हैं। हर किसी शिक्षा शास्त्री ने अपने अनुसार शिक्षा विद्यालय को परिभाषित किया है क्योंकि विद्यालय

विद्यालय वस्तुतः समाज एक लघु रूप है इस समाज में बच्चे विभिन्न परिवार, समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। विद्यालय समाज रूपी वस्त्र को परिवर्तित समय के अनुसार नव रूप देने तथा पुनः निर्माण का कार्य करते हैं। विद्यालय गतिशील विश्व में नई परिस्थितियों के साथ नए उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नवीन सोच एवं संरचनाएं प्रस्तुत करते हैं। विद्यालय और घर में कुछ समानताएं हैं दोनों का उद्देश्य बच्चों के व्यक्तित्व में आत्मीय विकास करना है। ताकि समाज द्वारा निर्धारित विद्यालय प्रक्रिया के उद्देश्यों को यथार्थ रूप दिया जा सके।

1.3 विद्यालय की परिभाषा

डीवी के अनुसार विद्यालय एक ऐसी विशिष्ट वातावरण है, जहां जीवन के कुछ गुणों और कुछ विशेष प्रकार की क्रियाएं तथा विषयों की शिक्षा इस उद्देश्य से दिया जाता है कि बालक का विकास वांछित दिशा में हो" ।

टी.पी.नन के अनुसार "विद्यालय को मुख्य रूप से इस प्रकार का स्थान नहीं समझा जाना चाहिए, जहां किसी निश्चित ज्ञान को सीखा जाता है, वरना यह वह स्थान है जहां बालकों को क्रियाओं के उन निश्चित रूपों में प्रशिक्षित किया जाता है जो इस विशाल संसार में सबसे महान और सबसे अधिक महत्व वाली है'।

ओटावे के अनुसार 'विद्यालय युवकों को विशेष प्रकार की शिक्षा देने वाले सामाजिक आविष्कार के रूप में समझे जाते हैं'।

के.जी. सैयदेन के अनुसार 'एक राष्ट्र का विद्यालय जनता की आ सकता हूं तथा समस्याओं पर आधारित होना चाहिए| विद्यालय का पाठ्यक्रम उनके जीवन का साररूप होना चाहिए| इसको सामुदायिक जीवन की महत्वपूर्ण विशेषताओं को अपने स्वाभाविक वातावरण में प्रतिबिंबित करना चाहिए'।

विद्यालय की परिभाषा समय के अनुसार परिवर्तित होते गई हैं। हर किसी शिक्षा शास्त्री ने अपने अनुसार शिक्षा विद्यालय को परिभाषित किया है क्योंकि विद्यालय

में जो ज्ञान दिया जाता है वह कहीं ना कहीं समाज से प्रभावित होता है, और समाज के बदलते रूप और जरूरतों के हिसाब से विद्यालय के पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन आता है जो हम इन शिक्षा शास्त्रियों की दृष्टि से देखेंगे।

- गांधीजी (1869) विद्यालय को समुदायिक केंद्र के रूप में व्यवस्थित करना चाहते थे| उनके अनुसार विद्यालय ऐसी केंद्र होने चाहिए जहां छात्रों का सब प्रकार का विकास हो, जो समाज की सेवा करें और जो समाज के साथ सहयोग करें| विद्यालय का संगठन इन ढंग से होना चाहिए। जिससे वे आत्मनिर्भर बन सके अर्थात हस्त कौशल के उत्पादन से विद्यालय का खर्चा निकाला जा सके| गांधीजी का मानना था शिक्षा में केवल छात्रों को मौखिक शिक्षा ना देकर कि उन्हें कौशल विकास किया जाए ताकि वह अपनी क्षमता पर कुछ कर सके ।
- टैगोर (1861) विद्यालय की आवश्यकताओं का समर्थन करते थे, किंतु उनके विचार अनुसार विद्यालय प्राचीन गुरु आश्रम की तरह शहर की कोलाहल से दूर सुंदर एवं रमणीय प्राकृतिक स्थलों के बीच स्थित होना चाहिए। उनका विश्वास था कि शांत वातावरण में ही शिक्षा एवं शिक्षार्थी की शिक्षा की साधना संभव हो सकती है। वह विद्यालय को एक पवित्र स्थल मानते थे जहां पर बालकों में सद्गुण का भावना विकसित होता है। उन्होंने लिखा है कि "विद्यालय आत्मबोध के आधार है" इन विचारों के अंतर्गत रविंद्र नाथ टैगोर ने एक विद्यालय की स्थापना की थी जिसका नाम शांतिनिकेतन था जो कोलकाता में स्थित है।
- घोष(1872) की विचार के अनुसार प्रत्येक विद्यालय का उद्देश्य बच्चों का भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार का विकास करना होना चाहिए। भौतिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय द्वारा संसार की सभी श्रेष्ठ भाषाओं, सभ्यताओं तथा संस्कृति, गणित और विज्ञान आदि की शिक्षा, दी जाये और आध्यात्मिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय बच्चों को श्रम करने,

मानव - सेवा करने और कर्तव्य पालन करने की शिक्षा दें। इसके अतिरिक्त विद्यालय में योग साधना की भी शिक्षा दी जानी चाहिए। श्री अरविंद घोष का यह भी मानना था कि विद्यालय जाति ,धर्म, से परे हो वहां पर हर प्रकार के जाति, धर्म, रंग, रूप की बच्चों को प्रवेश दिया जा सके विद्यालय एक विश्व बंधुत्व की भावना से परिपूर्ण पर्यावरण से बना होना चाहिए ।

- पीटर्स (1919) उचित शिक्षा के विधान के लिए विद्यालयों की आवश्यकता स्वीकार करते थे। उनकी दृष्टि से विद्यालयों का परिवेश लोकतांत्रिक होना चाहिए और इनमें स्वतंत्रता एवं अनुशासन, दोनों को समान स्थान देना चाहिए। ये ऐसी प्रयोगशाला और कार्यशालाओं के रूप में विकसित होने चाहिए जहां बच्चे शिक्षकों के निर्देशों में स्वयं करके स्वयं के अनुभव से सीखे।

इस तरह से हम देखते हैं कि बदलते हुए समय के अनुसार समाज में भी बदलाव आया जिसके अनुसार शिक्षा शास्त्री यह दर्शन शास्त्रों के द्वारा हमारे शिक्षा पद्धति में धीरे-धीरे करके बदलाव आते हैं। आज वर्तमान परिस्थिति के अनुसार हमारे शिक्षा विभाग के सदस्य द्वारा ने एमपी की निर्माण किया गया है जिसके अनुसार हमारे विद्यालयों में कराए जा रहे गतिविधियों को किस प्रकार से निर्धारित करना चाहिए उस पर ध्यान दिया गया ताकि वर्तमान समाज की आवश्यकता को पूरा किया जा सके और एक अच्छा और बेहतर देश का निर्माण किया जा सके ।

1.4 समाज

समाजशास्त्रीय द्वारा समाज शब्द का प्रयोग सामाजिक संबंधों के ताने-बाने के लिए किया है| इस दृष्टिकोण से सामाजिक मूर्त संगठन नहीं है, अपितु सामाजिक संबंधों

की एक अमूर्त व्यवस्था मात्र है ,सामाजिक संबंध कम से कम दो व्यक्तियों के बीच स्थापित होते हैं तथा इसके साथ ही यह भी अनिवार्य है कि वह व्यक्ति एक दूसरे से अस्तित्व के प्रति जागरूक हो तथा परस्पर अंतर क्रिया भी कर रहे हो यदि किसी स्थान पर दो या दो से अधिक व्यक्ति विद्यमान हो परंतु उनमें किसी प्रकार के संबंध ना हो और ना ही वह एक दूसरे को किसी भी रूप में प्रभावित कर रहे हो तो उस स्थिति में उन व्यक्तियों के समूह को समाज नहीं कहा जा सकता है ।

व्यक्ति की सामाजिक संबंधी सामाजिक व्यवहार के जनक होते हैं इस प्रकार सामाजिक संबंधों की स्थापना के लिए तीन बातों का होना अनिवार्य है प्रथम कम से कम 2 व्यक्ति का होना दूसरा उनमें एक दूसरे के प्रति जागरूकता होना तीसरा उनके द्वारा परस्पर कुछ ना कुछ आदान-प्रदान करना मैं मैकाइवर तथा पेज(1950) न उचित ही लिखा है जहां कहीं भी सहयोग के साथ संघर्ष की संभावना होती है वही समाज का अस्तित्व होता है ।

1.5 समाज की परिभाषा

व्यक्ति अपने समाज और देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अपने कार्यों को उचित चयन कर सके इसके लिए शिक्षा बहुत ही आवश्यक है और शिक्षा समाज को एक उचित मार्गदर्शन दें इसलिए शिक्षा और समाज दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए है **मैकाइवर तथा पेज** के अनुसार सामाजिक संबंधों में परिवर्तन ही समाज परिवर्तन है क्योंकि इसके अनुसार समाज सामाजिक संबंधों का जाल है ।"

गिडिंग्स के अनुसार," समाज स्वयं संघ है वह एक संगठन और व्यवहारों का योग है, जिसमे सहयोग देने वाले एक-दूसरे से सम्बंधित होते हैं।"

हेनकीन्स के अनुसार," हम अपने अभिप्राय के लिए समाज की परिभाषा इस प्रकार कर सकते है कि वह पुरूषों, स्त्रियों तथा बालकों का कोई स्थायी अथवा अविराम समूह

है जो कि अपने सांस्कृतिक स्तर पर स्वतंत्र रूप से प्रजाति की उत्पत्ति एवं उसके पोषण की प्रक्रियाओं का प्रबन्ध करने मे सक्षम होता हैं।"

मैकाइवर व पेज के अनुसार," समाज चलनों व प्रणालियों की, सत्ता व पारस्परिक सहयोग की, अनेक समूहों व भागों कि, मानव व्यवहार के नियंत्रणों और स्वाधीनताओं कि एक व्यवस्था हैं।"

पारसन्स के अनुसार," समाज को उन मानवीय संबंधों की जटिलता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो साधन और साध्य के रूप में की गयी क्रिया के फलस्वरूप उत्पन्न होते हैं, चाहे वे यथार्थ हों या केवल प्रतीकात्मक।"

रायट के अनुसार," यह व्यक्तियों का एक समूह नही हैं, अपितु विभिन्न समूहों के व्यक्तियों के बीच सम्बन्धों की व्यवस्था हैं।"

1.6 शिक्षक

शिक्षक की छवि पहले से काफी परिवर्तित हो चुकी है, क्योंकि पहले शिक्षक को सर्वज्ञानी माना जाता था, जैसे कि शिक्षक सब कुछ जानता है, और जो कहता है वही सही है और हमें उनकी बोली हुई बातों को पूरी तरह से माना चाहिए और विद्यालयों में भी कक्षाएं शिक्षक केंद्रित हुआ करता था| जो अब नहीं है वर्तमान समय में हम देख सकते हैं, कक्षाओं में ज्ञान बाल केंद्रित है ,और शिक्षक एक सलाहकार या मार्गदर्शक के रूप में कार्यरत है ,हां पर शिक्षक विद्यालय में वह भूमिका निभाता है, जो दो कड़ी को जोड़ता है क्योंकि हमारा विद्यालय समाज का एक लघु रूप है। जिसमें विभिन्न जाति ,धर्म, संप्रदाय से विद्यार्थी आते हैं उन सभी को एक साथ एक ही दृष्टि से देखती हुई। एक समान शिक्षा देना शिक्षक का कर्तव्य है। इसीलिए शिक्षक के दृष्टिकोण का विद्यालय में बहुत ही अधिक महत्व है, कि वह किस प्रकार का विचार रखता है।

महात्मा गांधी के विचार अनुसार शिक्षा की बहुत कुछ सफलता शिक्षकों पर निर्भर है। अतः शिक्षक ऐसे होने चाहिए जो मानव गुणों से युक्त हो, बालकों की जिज्ञासा और उत्सुकता को बढ़ाये, उनकी भावनाओं, रुचियां और आवश्यकताओं का मार्ग- दर्शन करें और उनकी चिंताओं तथा समस्याओं को सुलझाये| उन्हें स्थानीय परिस्थितियों का पूर्ण ज्ञान हो जिससे कि वे स्थानीय व्यवसायों हस्तकलाओं एवं उद्योग धंधों को शिक्षा के लिए सफलता पूर्वक उपयोग कर सकें।

1.7 शिक्षक का महत्व

भारतीय परंपरा शिक्षक को सर्वोच्च सम्मान और दर्जा प्रदान करती है, जो अंधकार को दूर करने वाला है, व्यक्ति और समाज को प्रबुद्ध करता है और इसे आध्यात्मिकता के साथ ज्ञान युक्त माना जाता है। वह मानव को मानवता की ओर ले जाने में सक्षम है। भारत के शिक्षकों की परंपरा और इस देश की स्वदेशी शिक्षा प्रणाली ने दूसरों से बहुत आगे ज्ञान और ज्ञान का निर्माण और प्रसार किया।

एक शिक्षक को उसके नेक मिशन के कारण पूरे मानव इतिहास में पूजा और सम्मान दिया गया है। इस प्रकार शिक्षक किसी भी शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी संपत्ति होते हैं। उन्हें शिक्षा प्रणाली की रीढ़ के रूप में स्वीकार किया जाता है। भारत के शिक्षा आयोग (1964-66) ने शिक्षकों के इस प्रभाव को शक्तिशाली शब्दों में यह घोषणा करते हुए स्वीकार किया कि, "कोई भी प्रणाली अपने शिक्षक की स्थिति से ऊपर नहीं उठ सकती है"। डॉ. राधाकृष्णन (1949) ने उपयुक्त रूप से देखा और कहा, "समाज में शिक्षकों का स्थान महत्वपूर्ण महत्व रखता है। वह पीढ़ी से पीढ़ी तक बौद्धिक परंपराओं और तकनीकी कौशल के संचरण के लिए धुरी के रूप में कार्य करता है और सभ्यता के दीपक को बनाए रखने में मदद करता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के चिंतन में शिक्षक को सबसे महत्वपूर्ण कारक माना। एक शिक्षक

एक संवादात्मक प्रक्रिया के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व को आकार देता है और उन्हें बेहतर नागरिक बनाने का प्रयास करता है। इस प्रकार, वह हमारे देश के भाग्य को आकार देने की जिम्मेदारी साझा करता है। शिक्षकों के गुणों पर जोर देते हुए कोठारी आयोग (1964-66) की रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि, "शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्रीय विकास में इसके योगदान को निर्धारित करने वाले सभी कारकों में, शिक्षक निस्संदेह सबसे महत्वपूर्ण है। यह उनके व्यक्तिगत गुणों और चरित्र, उनकी शैक्षिक योग्यता और पेशेवर क्षमता पर है कि सभी शैक्षिक प्रयासों की सफलता अंततः निर्भर होनी चाहिए।" शिक्षक ही राष्ट्र के वास्तविक शिल्पी होते हैं। "शिक्षक के विरुद्ध या उनकी भागीदारी के बिना कोई भी सुधार कभी सफल नहीं हुआ।" (जे. मोहंती-2007) एक शिक्षक के वास्तविक महत्व को इन पंक्तियों के माध्यम से समझा जा सकता है:- "अगर कोई डॉक्टर गलती करता है, तो उसे दफना दिया जाता है। अगर कोई इंजीनियर गलती करता है, तो उसे पुख्ता किया जाता है। अगर कोई वकील गलती करता है, तो उसे दायर किया जाता है, लेकिन जब एक शिक्षक गलती करता है, तो यह राष्ट्र द्वारा परिलक्षित होता है। "

1.8 विद्यालय और समाज में शिक्षक की भूमिका

समाज में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण और मूल्यवान दोनों है। वे एक स्वस्थ और प्रगतिशील समाज के मुख्य स्तंभों में से एक हैं। वे शिक्षण का भार और जिम्मेदारी वहन करते हैं और माता- पिता के अलावा, वे बच्चों के लिए ज्ञान और मूल्यों का मुख्य स्रोत हैं। यह ठीक ही कहा गया है कि एक शिक्षक हमारे भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आजकल इंजीनियर या डॉक्टर बनना अच्छा माना जाता है, लेकिन बिना शिक्षकों के उन्हें वह मुकाम नहीं मिल पाता जहां वे हैं। शिक्षक अपने पास मौजूद जानकारी को साझा करते हैं। इसके विपरीत, डॉक्टर और

इंजीनियर जरूरी नहीं कि अपना हिस्सा साझा करें। चार साल की उम्र से ही एक बच्चा खुद को एक शिक्षक के हाथों में पाता है। हमारे पूरे जीवन में, हमारे शिक्षक हमें प्रेरित करते हैं और हमें मूल्यों के बारे में सिखाते हैं। वे हमें अपने बच्चों की तरह मानते हैं और हमें अपने अनुभवों से सीखते हैं। वे हमें अपने पैरों पर खड़े होने और किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए पर्याप्त मजबूत बनाते हैं। कोई भी इंजीनियर या डॉक्टर हमारे जीवन में शिक्षकों के योगदान की जगह कभी नहीं ले सकता! एक अच्छा शिक्षक एक मोमबत्ती की तरह होता है जो खुद को दूसरों के लिए रास्ता रोशन करने के लिए जला देता है। एक बच्चे के जीवन में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। एक शिक्षक डॉक्टर या इंजीनियर से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। डॉक्टर और इंजीनियर बनाने वाला शिक्षक है। जबकि डॉक्टर केवल लोगों का इलाज कर सकते हैं या उन्हें सलाह दे सकते हैं, शिक्षक इंसानों को मूल्यों के साथ बनाते हैं और सही और गलत के बीच अंतर सिखाते हैं। एक इंजीनियर प्रतिभाशाली हो सकता है, लेकिन वह शिक्षक है जो प्रतिभाशाली बनाता है। इसी वजह से हिंदू पौराणिक कथाओं में शिक्षकों को देवताओं से भी ऊपर माना गया है। यह शिक्षक है जो छोटे बच्चों के जीवन को आकार देता है। शिक्षक जीवन भर बच्चों की नन्ही-नन्ही उंगलियों को पकड़कर सही रास्ते पर चलना सिखाता है। क्योंकि यह अपेक्षाकृत कम वेतन वाली नौकरी है, आज की पीढ़ी शिक्षक के महत्व को नहीं समझ सकती है। कल्याण, वे सोचते हैं, विशुद्ध रूप से पैसे में निहित है। लेकिन फिर, शिक्षकों के बारे में सच्चाई अपने आप में एक सच्चाई है, और हमेशा रहेगी।

1.9 समस्या का कथन

विद्यालय और समाज संबंधों के संदर्भ में शिक्षक के दृष्टिकोण का अध्ययन

1.10 समस्या का औचित्य

समय के साथ साथ समाज में हो रहे परिवर्तन को देखते हुए शिक्षाकों के दृष्टिकों में भी हो रहे परिवर्तन को समाधान के लिए इस विषय का चयन किया गय

1.11 अध्ययन का उद्देश्य

शिक्षक के दृष्टिकोण का अध्ययन करना

1. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों पर समाज के प्रभाव का अध्ययन

2 .माध्यमिक विद्यालय के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थी के विकास पर विद्यालयी गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन

3. नैतिक विकास पर सरकारी और निजी विद्यालयों के विद्यार्थी पर सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन

4. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का दृश्य विद्यालय एवं समाज के संबंधों से संबंधित दृष्टिकोण का अध्ययन

1.12 परिकल्पना

1. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों पर समाज के प्रभाव के अध्ययन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है|

2. सरकारी और निजी विद्यालयों में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी के विकास पर विद्यालय की गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

3. नैतिक विकास पर सरकारी और निजी विद्यालयों के विद्यार्थी पर सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन करने में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

4. सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का विद्यालय तथा समाज से संबंधित दृष्टिकोणओं में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

1.13 समस्या का परिसीमा

किसी वृहत क्षेत्र के अध्ययन को सरल एवं प्रभावी बनाने हेतु एवं उसे छोटा रूप प्रदान करने हेतु समस्या के क्षेत्र का परिसीमा करना आवश्यक हो जाता है। यदि समस्या सीमित या स्पष्ट होगी तो उसका अध्ययन गहनता से किया जा सकता है। जिससे शोध की उपदेश के साथ वैधता और विश्वसनीयता भी बढ़ती है ,अतः शोधार्थी ने भी अध्ययन की प्रकृति एवं समय सीमा को ध्यान में रखते हुए पूर्वी सिंहभूम जिले के मुसाबनी प्रखंड के सरकारी एवं निजी विद्यालय का चयन किया जिनमें से 2 निजी विद्यालय है तथा 2 सरकारी विद्यालय पर अध्ययन किया गया है ।

सरकारी विद्यालय

सरकारी विद्यालयों का गठन बालकों के वातावरण को शिक्षा से जोड़ने के लिए किया गया है। इस विद्यालय में होने वाले संपूर्ण खर्च का वाहन प्रदेश सरकार द्वारा किया जाता है। जिसका उद्देश्य प्रत्येक वर्ग समुदाय के बालकों को शिक्षित करना होता है।

निजी विद्यालय

निजी विद्यालयों का गठन व्यक्ति विशेष के द्वारा किया जाता है इस विद्यालय में बालक हूं को शिक्षा ग्रहण करने के लिए कुछ ना कुछ निवेश करना पड़ता है।

1.14 अध्ययन का अध्याय

अध्याय 1

अध्ययन पृष्ठभूमि इस अध्ययन के माध्यम से हम विद्यालय एवं समाज कि संबंधों को देखने का प्रयास कर रहे हैं जोकि एक दूसरे को प्रभावित करता है। और इस संबंध में शिक्षक की क्या भूमिका है।

अध्याय 2

साहित्य समीक्षा अध्ययन जिस विषय वस्तु पर शोध कर रहे हैं। उस विषय वस्तु पर पूर्व कितने अध्ययन किए जा चुके हैं इसका अध्ययन किया जाता है।

अध्याय 3

अनुसंधान पद्धति अध्ययन अध्याय के माध्यम से हम अनुसंधान प्रकार यह रणनीति डाटा के प्रकार अनुसंधान दर्शन आंकड़ों का आकार आंकड़ों के प्रकार पर ध्यान देते हैं जिसके सहायता से हमारा अनुसंधान आगे किया जाएगा।

अध्याय 4

आंकड़ों का विश्लेषण अध्ययन प्राप्त आंकड़ों के द्वारा शोध विषय का अध्ययन किया जाना हमें जो आंकड़े प्राप्त हुए हैं उसके द्वारा हमारे विषय वस्तु हमारे विषय को कौन सी दिशा मिलती है उसे देखना।

अध्याय 5

निष्कर्ष इस अनुसंधान के माध्यम से हमें क्या प्राप्त हुआ और हम इसमें आगे क्या देख सकते हैं आने वाले भविष्य में हम इस अध्ययन का क्या लाभ है और हम कौन कौन से क्षेत्र में अध्ययन कर सकते हैं इन बातों पर ध्यान दिया जाता है|